अक्टूबर, 2019

मंथन

अर्ध-वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका

निर्यात निरीक्षण परिषद्

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)

अर्धवार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका

मंथन

संरक्षक एवं प्रेरणास्रोत

श्री दिवाकर नाथ मिश्रा

संयुक्त सचिव एवं निदेशक (निरीक्षण एवं गुणवत्ता नियंत्रण)

प्रधान संपादक

डॉ. जे. एस. रेड्डी

अपर निदेशक

सम्पादक

कन्नन कस्तुरी एन. एस.

उप निदेशक (प्रशासन)

सम्पादक मण्डल सदस्य

आर.एम. मंडलिक

उप निदेशक (तकनीकी)

श्री वसी असगर

सहायक निदेशक (तकनीकी)

निर्यात निरीक्षण परिषद

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, वाणिज्य विभाग, भारत सरकार)

एन.डी.वाई.एम.सी.ए. कल्चरल सेंटर बिल्डिंग,

1, जयसिंह रोड, नई दिल्ली–110001

दूरभाष सं. 23365540 / 23748189

पत्रिका में प्रकाशित लेखों, रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। निर्यात निरीक्षण परिषद, हिंदी अनुभाग या सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

निःशुल्क वितरण के लिए

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संदेश – श्री सुधांशु पांडेय, आई.ए.एस., अध्यक्ष, निर्यात निरीक्षण परिषद	3
2.	निदेशक की कलम से – श्री दिवाकर नाथ मिश्रा, आई.ए.एस., संयुक्त सचिव एवं निदेशक, निर्यात निरीक्षण परिषद	4
3.	संपादकीय – श्री कन्नन कस्तुरी एन. एस., उप निदेशक (गैर–तकनीकी), निनिप	6
4.	निर्यात निरीक्षण परिषद / निर्यात निरीक्षण अभिकरणों में पिछले छह महीनों के मध्य गतिविधियाँ	7
5.	निर्यात निरीक्षण परिषद में हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन	9
6.	निर्यात निरीक्षण अभिकरण–मुंबई में हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन	13
7.	झींगा निर्यात और झींगा मछली के प्रभावशाली स्वास्थ्य लाभ –डॉ. नीरज पी अवस्थी	15
8.	प्लास्टिक प्रदूषण के कारण एवं प्रभाव–स्वच्छता ही सेवा –श्री शशि प्रकाश त्रिपाठी, तकनीकी अधिकारी	17
9.	निर्यात निरीक्षण अभिकरण – कोच्ची में हिन्दी दिवस / पखवाड़ा समारोह–2019 की रिपोर्ट	19
10.	राज्य मात्स्यिकी अधिकारियों (सहायक निदेशक) के लिए ''लैंडिंग साइट / मत्स्यन हार्बर / नीलामी हॉल की अपेक्षाओं'' पर जागरूकता कार्यक्रम	26
11.	निनिअ–कोची में जून 2019 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण / जागरूकता कार्यक्रमों का विवरण	27
12.	ई–खरीद पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	29
13.	सार्वजनिक डिजिटल प्लेटफॉर्म पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	30
14.	निर्यात निरीक्षण अभिकरण–कोच्ची में वर्ष 2019–20 को निनिप एवं वाणिज्य मंत्रालय के निर्देशानुसार किए गए कार्यक्रमों का विवरण	31
15.	निर्यात निरीक्षण अभिकरण–कोलकाता की गतिविधियाँ एवं विवरण	32
16.	खाद्य सुरक्षा को बनाए रखने में विश्लेषणात्मक परीक्षण की भूमिका ''खाद्य परीक्षण गुणवत्ता और आंकड़ों की प्रमाणिकता पर निर्भर है'' –डॉ. अनूप ए. कृष्णन, डॉ. लिजो जॉन, डॉ. बी. विजयकुमार, श्री टी. महेश्वर राव एवं श्री जयपालन जि.	38
17.	प्रकृतिक संसाधन –श्री लेखराज कटारिया, सहायक निदेशक (त.)	45
18.	आत्मविश्वास –श्री सुभाष शर्मा, आशुलिपिक–1	46
19.	निर्यात निरीक्षण परिषद / निर्यात निरीक्षण अभिकरण कार्यालयों में अप्रैल, 2019 से सितम्बर, 2016 तक सेवानिवृत्त अधिकारी एवं कर्मचारीगण	47

Sudhansu Pandey
Chairman

भारत सरकार
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
वाणिज्य विभाग
उद्योग भवन, नई दिल्ली–110 011

Government of India
Ministry of Commerce & Industry
Department of Commerce
Udyog Bhawan, New Delhi-110 011

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि निर्यात निरीक्षण परिषद द्वारा अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका का अक्टूबर, 2019 अंक प्रकाशित किया जा रहा है। ''मंथन'' पत्रिका विभागीय गतिविधियों से सुसज्जित, सुंदर एवं आकर्षक होने के साथ ज्ञान वर्धक भी है। परिषद इस पत्रिका के अविरत प्रकाशन के माध्यम से कार्मिकों की सर्जनात्मकता को उजागर करने के साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में भी जागरूक रहती है। मेरा विश्वास है कि इस प्रकार से पत्रिका अपनी गतिशीलता से नई ऊंचाइयों को छूकर राजभाषा कार्यान्वयन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी।

आशा करता हूँ कि पत्रिका का प्रकाशन निरंतर सफलता से होता रहे, इसके लिए सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

सुधांशु पांडेय

(सुधांशु पांडेय, आई.ए.एस.)
अध्यक्ष,
निर्यात निरीक्षण परिषद

सत्यमेव जयते

निर्यात निरीक्षण परिषद्
(आईएसओ 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार
(तीसरी मंजिल, एन.वी.आइ.एम.सी.ए. कल्चरल सेन्टर बिल्डिंग)
1, जय सिंह रोड, नई दिल्ली–110001
EXPORT INSPECTION COUNCIL
(An ISO 9001:2008 Certified Organisation)
(Ministry of Commerce & Industry, Govt. of India)
3rd Floor, NDYMCA Cultural Centre Building,
1, Jai Singh Road, New Delhi-110001

निदेशक की अभिव्यक्ति

प्रिय सहयोगियों,

निर्यात निरीक्षण परिषद की गृह पत्रिक **''मंथन''** के अक्टूबर, 2019 अंक को आपके सम्मुख पेश करने में मुझे गर्व है। पत्रिका के इस अंक में परिषद द्वारा तकनीकी/प्रशासनिक मामलों से संबंधित लेख, भारत या विदेश में आयोजित किए गए प्रशिक्षण/सेमिनार तथा दैनिक कार्यकलापों का समावेश किया गया है। इस पत्रिका में निनिप ने अपने कार्यक्षेत्र में प्राप्त की गई उपलब्धियों को उल्लिखित करने के साथ अधिकारियों से प्राप्त लेखों को प्रस्तुत किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका के सफल प्रकाशन में आपका संपूर्ण सहयोग अवश्य मिलता रहेगा।

मुझे यह बताने में भी गर्व है कि निर्यात निरीक्षण परिषद एवं सभी निर्यात निरीक्षण अभिकरणों में सितम्बर माह में हिन्दी पखवाड़ा समारोह–2019 बड़े उत्साह से मनाया गया। जैसा की हम सब जानते हैं कि हिन्दी भारत के एक बड़े जन समुदाय द्वारा बोली एवं समझी जाने वाली भाषा है तथा अत्यंत सरल, समग्र एवं सशक्त, हमारी राष्ट्रीय पहचान, तथा हमारी सांस्कृतिक समृद्धि की प्रतीक है। हिन्दी के इस महत्व को देखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया था। इसी अनुक्रम में 26 जनवरी, 1950 में लागू संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार यह व्यवस्था की गयी कि संघ सरकार की राजभाषा हिन्दी होगी, तथा इसकी लिपि, देवनागरी होगी। मुझे विश्वास है कि हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित कार्यक्रमों से कार्यालय के दैनिक कार्यों एवं बोलचाल में हिन्दी का प्रयोग बढ़ेगा तथा हिन्दी पखवाड़ा का उद्देश्य भी यह ही है।

मुझे यह भी बताने में खुशी है की निर्यात निरीक्षण अभिकरण–मुंबई में खाद्य सुरक्षा तथा अनुप्रयुक्त पोषण के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण केंद्र (आई.टी.सी.–एफ.

एस.ए.एन.) का उद्घाटन किया गया। यह प्रशिक्षण केंद्र, निर्यात निरीक्षण परिषद (नि.नि.प.) तथा भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफ.एस.एस.ए.आई.) द्वारा वैश्विक खाद्य सुरक्षा भागीदारी (जी.एफ.एस.पी.) के साथ मिलकर स्थापित किया गया है, जो विश्व बैंक की एक पहल है। यह सुविधा खाद्य श्रृंखला में विभिन्न हित धारकों के लिए खाद्य सुरक्षा के संबंध में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करेगी, जिसमें विभिन्न खाद्य व्यवसाय संचालक (एफ.बी.ओ.), निर्यातक आदि शामिल हैं। इसके अलावा, मलेशियाई प्रतिनिधिमंडल (डी.वी.एस. एवं जे.ए.के.आई.एम.) ने भारतीय जिलेटिन तथा डेयरी संस्थानों का निरीक्षण करने के लिए निर्यात निरीक्षण परिषद का दौरा किया। यूरोपीय संघ–जी.एस.पी. के आर.ई.एक्स. सिस्टम पर बांग्लादेश के प्रतिनिधिमंडल के साथ एक पारस्परिक सत्र आयोजित किया गया। जी.ए.सी.सी., चीन के सामान्य प्रशासनों तथा निर्यात निरीक्षण परिषद के बीच भारतीय स्पेंट मिर्च के आयात पर सेनेटरी एवं फाइटोसैनेटरी विनियमों का एक प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए गए। खाद्य और औषधि सुरक्षा मंत्रालय (एम.एफ.डी.एस.), कोरिया के प्रतिनिधिमंडल ने मत्स्य उत्पाद प्रसंस्करण प्रतिष्ठान के ऑनसाइट निरीक्षण के लिए भारत का दौरा किया। निर्यातकों को अधिक कुशल सेवाएं प्रदान करने के लिए निर्यात निरीक्षण परिषद को पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली में नए विशाल परिसर में स्थानांतरित किया गया है। मुझे विश्वास है कि इन सभी गतिविधियों/कार्यक्रमों से निर्यातकों/हितकारकों को लाभ मिलेगा।

निर्यात निरीक्षण परिषद एवं सभी निर्यात निरीक्षण अभिकरणों के कार्यालयों में मुख्य कार्य निर्यात व्यापार से संबंधित है तथा इसका निपटान आयात करने वाले देशों की कार्यनीति के अनुसार करना पड़ता है। इस परिस्थिति में हम चाहते हैं कि जहाँ तक संभव हो, अन्य सारे कार्यालयीन कार्य राजभाषा हिंदी में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया जाए। अन्य कार्यकलापों के साथ ही राजभाषा विभाग के दिशा निर्देशों के अनुसार हिंदी कार्यान्वयन कार्य भी सुगमता से आगे बढ़े। इसके लिए दृढ संकल्प एवं इच्छा शक्ति से अपनी राजभाषा का प्रयोग फाइलों में करने का प्रयास अवश्य करें। आशा करते हैं कि आगामी दिनों में खासकर निनिप/निनिअ के प्रत्येक अधिकारी हिंदी भाषा के प्रयोग एवं प्रचार में विशेष ध्यान देंगे।

शुभकामनाओं के साथ,

(दिवाकर नाथ मिश्रा, आई.ए.एस.)
संयुक्त सचिव एवं निदेशक
निर्यात निरीक्षण परिषद

Fax : 011-23748024
E-mail : eic@eicindia.gov.in
Website : www.eicindia.gov.in
ग्राम : निर्यातगुण
Grames : Shipmentquality
दूरभाष
Phone } 011-23365540, 23341263, 23748189

निर्यात निरीक्षण परिषद्
(आईएसओ 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार
(तीसरी मंजिल, एन.वी.आइ.एम.सी.ए. कल्चरल सेन्टर बिल्डिंग)
1, जय सिंह रोड, नई दिल्ली–110001

EXPORT INSPECTION COUNCIL
(An ISO 9001:2008 Certified Organisation)
(Ministry of Commerce & Industry, Govt. of India)
3rd Floor, NDYMCA Cultural Centre Building,
1, Jai Singh Road, New Delhi-110001

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

निर्यात निरीक्षण परिषद द्वारा प्रकाशित छमाही गृह–पत्रिका **''मंथन''** के अक्टूबर, 2019 अंक को आपके सामने समर्पित करते हुए मुझे अत्यधिक खुशी है।

हिन्दी, भारत सरकार तथा कई राज्यों की राजभाषा होने के साथ संपर्क भाषा तथा विश्व भाषा के रूप में भी अपने पंख फैला रही है। आज अंग्रेज़ी के बाद हिंदी ही वह भाषा है, जो संसार में दूसरे स्थान पर सर्वाधिक प्रचलित है। हम सब अपनी राजभाषा हिंदी को हृदय से स्वीकार करेंगे। इस उम्मीद के साथ, हिंदी के प्रचार–प्रसार में उत्तरोत्तर प्रगति हासिल करने में परिषद की गृह पत्रिका अपनी उत्कृष्ट भूमिका अदा करेगी।

मंथन पत्रिका को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए आपके बहुमूल्य विचारों एवं सुझावों की हमें सदैव प्रतीक्षा रहेगी।

शुभकामनाओं के साथ,

(कन्नन कस्तुरी एन. एस.)
उप निदेशक (गैर तकनीकी)

निर्यात निरीक्षण परिषद / निर्यात निरीक्षण अभिकरणों में पिछले छह महीनों के मध्य गतिविधियाँ

दिनांक 22 सितम्बर, 2019 को निर्यात निरीक्षण अभिकरण–मुंबई में खाद्य सुरक्षा तथा अनुप्रयुक्त पोषण के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण केंद्र (आई.टी.सी.–एफ.एस.ए.एन.) का उद्घाटन किया गया। यह प्रशिक्षण केंद्र, निर्यात निरीक्षण परिषद (नि.नि.प.) तथा भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफ.एस.एस.ए.आई.) द्वारा वैश्विक खाद्य सुरक्षा भागीदारी (जी.एफ.एस.पी.) के साथ मिलकर स्थापित किया गया है, जो विश्व बैंक की एक पहल है। यह सुविधा खाद्य श्रृंखला में विभिन्न हित धारकों के लिए खाद्य सुरक्षा के संबंध में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करेगी, जिसमें विभिन्न खाद्य व्यवसाय संचालक (एफ.बी.ओ.), निर्यातक आदि शामिल हैं।

इसके अलावा, मलेशियाई प्रतिनिधिमंडल (डी.वी.एस. एवं जे.ए.के.आई.एम.) ने भारतीय जिलेटिन तथा डेयरी संस्थानों का निरीक्षण करने के लिए निर्यात निरीक्षण परिषद का दौरा किया।

दिनांक 19 जुलाई, 2019 को यूरोपीय संघ–जी.एस.पी. के आर.ई.एक्स. सिस्टम पर बांग्लादेश के प्रतिनिधिमंडल के साथ एक पारस्परिक सत्र आयोजित किया गया।

इसी कड़ी को एक और कदम आगे बढ़ाते हुए, दिनांक 08 मई, 2019 को जी.ए.सी.सी., चीन के सामान्य प्रशासनों तथा निर्यात निरीक्षण परिषद के बीच भारतीय स्पेंट मिर्च के आयात पर सेनेटरी एवं फाइटोसैनेटरी विनियमों का एक प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए गए।

खाद्य और औषधि सुरक्षा मंत्रालय (एम.एफ.डी.एस.), कोरिया के प्रतिनिधिमंडल ने मत्स्य उत्पाद प्रसंस्करण प्रतिष्ठान के ऑनसाइट निरीक्षण के लिए दिनांक 23 सितम्बर, 2019 को भारत का दौरा किया जो कि 03 अक्टूबर, 2019 तक होना है।

इसके अलावा, दिनांक 23 अगस्त 2019 को डॉ. जे.एस. रेड्डी अपर निदेशक, निर्यात निरीक्षण परिषद ने डॉ. हर्षवर्धन, केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री से राष्ट्रीय खाद्य प्रयोगशाला/ए.एन. आर.एल. के रूप में निर्यात निरीक्षण अभिकरण के प्रयोगशालाओं की मान्यता का प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

निर्यात निरीक्षण परिषद में हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन

सुश्री हेताक्षी आर. परमार, अवर श्रेणी लिपिक
नि.नि.प., नई दिल्ली

निनिप, नई दिल्ली द्वारा 13 सितम्बर, 2019 से 27 सितम्बर, 2019 तक हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान निम्नलिखित कार्यकलाप आयोजित किए गए:

हिन्दी पखवाड़ा समारोह का उदघाटन, अपर निदेशक की अध्यक्षता में दिनांक 13 सितम्बर, 2019 को आयोजित बैठक में किया गया। अपने भाषण में अपर निदेशक ने राजभाषा के रूप में हिन्दी की महत्ता तथा अपने दैनिक कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। अपर निदेशक महोदय ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से हिन्दी अनुभाग द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए भी अनुरोध किया।

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 17 सितम्बर, 2019 को किया गया। निबंध प्रतियोगिता का विषय रहा **''प्लास्टिक प्रदूषण के कारण एवं प्रभाव–स्वच्छता ही सेवा''।** इसमें प्रथम पुरस्कार श्री शशि प्रकाश त्रिपाठी, तकनीकी अधिकारी को प्राप्त हुआ। दिनांक 19 सितम्बर, 2019 को आयोजित हिन्दी अनुवाद प्रतियोगिता में श्रीमती वर्षा मिश्रा, तकनीकी अधिकारी ने प्रथम पुरस्कार जीता। इसके अलावा वाद–विवाद तथा प्रश्नोत्तरी जैसी प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन, दिनांक 25 सितम्बर, 2019 को किया गया। इस प्रतियोगिता का विषय रहा **''प्लास्टिक बैग को बैन कर देना चाहिए–हाँ या ना''।** दिनांक 24 सितम्बर, 2019 को प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गयी। यह प्रतियोगिता, 03–03 प्रतिभागियों का समूह बना कर आयोजित की गयी थी। सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़े उत्साह से इस प्रतियोगिता में भाग लिया। इस कार्यक्रम में विजेता समूह रहे–श्री सचिन पंवार, सहायक निदेशक, श्रीमती वर्षा मिश्रा, तकनीकी अधिकारी एवं श्री शशि प्रकाश त्रिपाठी, तकनीकी अधिकारी, विजेताओं को ट्रॉफी द्वारा सम्मानित किया गया।

हिन्दी पखवाड़ा समारोह के संबंध में दिनांक 27 सितम्बर, 2019 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला को ''डॉ. विचार दास, निदेशक (सेवानिवृत), केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो'' ने संबोधित किया। परिषद के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने कार्यशाला में भाग लिया। हिन्दी पखवाड़ा–2019, सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से सफल रहा।

निर्यात निरीक्षण परिषद कार्यालय में हिन्दी दिवस/पखवाड़ा का आयोजन

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान कार्यशाला एवं प्रतियोगिताओं में विजेताओं को पुरस्कार वितरण

नि.नि.प., नई दिल्ली कार्यालय में हिन्दी दिवस/पखवाड़ा के दौरान पुरस्कार ग्रहण करते हुए

नि.नि.प., नई दिल्ली कार्यालय में हिन्दी दिवस/पखवाड़ा के दौरान पुरस्कार ग्रहण करते हुए

निर्यात निरीक्षण अभिकरण-मुंबई में हिन्दी पखवाड़ा समारोह का आयोजन

निनिअ–मुंबई में स्वच्छता पखवाड़ा समारोह के आयोजन की कुछ झलकियाँ

झींगा, निर्यात और झींगा मछली के प्रभावशाली स्वास्थ्य लाभ

डॉ. नीरज पी. अवस्थी, सहायक निदेशक,
नि.नि.अ., मुंबई

भारत में मत्स्य पालन अपने तटीय राज्यों में एक प्रमुख उद्योग है, जिसमें 14 मिलियन से अधिक लोग कार्यरत हैं। 2016–17 में, देश ने 11,34,948 मीट्रिक टन समुद्री भोजन का निर्यात किया, जिसकी कीमत 5.78 बिलियन अमेरिकी डॉलर (90,37,870.90 करोड़) थी, इनमें से जमे हुए झींगा निर्यात की शीर्ष वस्तु थी। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) के अनुसार, 1947 से मछली का उत्पादन दस गुना से अधिक और 1990 और 2010 के बीच दोगुना हो गया है।

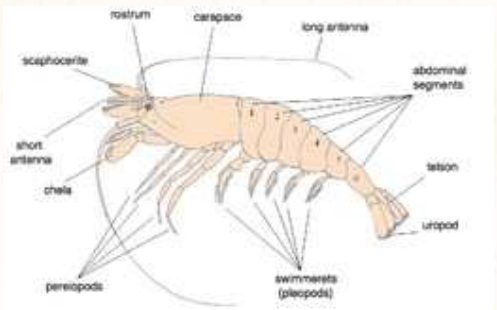

भारत में समुद्री तट रेखा के 8,129 किलोमीटर (5,051 मील), 3,827 मछली पकड़ने के गांव और 1,914 पारंपरिक मछली लैंडिंग केंद्र हैं। भारत के ताजे जल संसाधनों में 195,210 किलोमीटर (121,300 मील) नदियाँ और नहरें शामिल हैं, 2.9 मिलियन हेक्टेयर छोटे और बड़े जलाशय, 2.4 मिलियन हेक्टेयर तालाब और झीलें और लगभग 0.8 मिलियन हेक्टेयर बाढ़ के मैदान आर्द्रभूमि और जल निकाय हैं। वर्ष 2010 तक, समुद्री और मीठे पानी के संसाधनों ने 4 मिलियन मीट्रिक टन से अधिक मछली पकड़ने की संयुक्त टिकाऊ क्षमता की पेशकश की। इसके अलावा, भारत के जल और प्राकृतिक संसाधन 2010 में 3.9 मिलियन मीट्रिक टन मछली के एक्वाकल्चर (कृषि मछली पकड़ने) में दस गुना वृद्धि की क्षमता प्रदान करते हैं, यदि भारत मछली पकड़ने के ज्ञान, नियामक सुधार और स्थिरता नीतियों को अपनाने के लिए था।

झींगा मछली के निम्नलिखित लाभ हैं:

1 झींगा मछली बालों के झड़ने को बंद कर सकते हैं।

कई पुरुषों और महिलाओं को बालों के झड़ने की समस्या होती है जो कि असमान्य है, क्योंकि उनमें आनुवांशिक लक्षण भी कारक नहीं होते हैं। इन मामलों में, इसे खराब आहार और प्रदुषित पर्यावरण प्रमुख रुप से उत्तरदायी होते हैं जिनका उपचार किया जा सकता है। विशेष रूप से, जस्ता की कमी बालों के झड़ने के प्रमुख कारणों में से एक कारण हैं, अपने आहार में आसानी से झींगा की खपत बढ़ाने से, जस्ता की कमी को पूरी किया जा सकता हैं। झींगा समुद्री भोजनों में जस्ता का भरपूर स्रोतों में से एक प्रमुख खाद्य है।

2. झींगा कैंसर के जोखिम को कम कर सकता हैं।

झींगा में कई एंटी–ऑक्सीडेंट व खनिज तत्व भरपूर मात्रा में पाये जाते हैं। झींगा में प्रमुख रुप से

दो खनिज तत्व अस्थैक्सियिन एवं सेलेनियम पाये पाये जाते हैं। सेलेनियम में कई दियॅक्स एंजाइम को नियंत्रित करने की क्षमता है तथा यह कैंसर के टयूमर को वृद्धि व रोकथाम में महत्वपूर्ण भूमिका रखता हैं।

3. वजन घटाने को बढ़ावा देना।

झींगा वजन घटाने में सहायक है, यह कई तरह से शरीर के चयापचय दर को बढ़ावा देता है जोकि लेप्टिन के स्तर को अनुकूलित करता है। लेप्टीन भूख को नियंत्रित करता है व वसा के विपरीत मांसपेशी कोशिकाओं में पोषक तत्वों के विभाजन में मदद करता है। कई लोग लेटिन के लिए प्रतिरोध विकसित कर लेते है जिससे अल्पसमय अन्तरालपर भूख अनुभव करते है व हार्मोन अपना कार्य नहीं कर पाते है जिससे आपको कब खाना बंद करना है यह अनुभव नहीं होता है। यदि आप वास्तविक वजन घटाने की इच्छा रखते है तो झींगा को अपने भोजन में शामिल करना सार्थक प्रयास होगा.

4. स्ट्रोक और दिल के दौरे के जोखिम को कम करता हैं।

झींगा में एक दुर्लभ फाइब्रिनोलाइटिक एंजाइम होता है जो खून के थक्के को गलाने में सहायक होता है। जो लोग स्ट्रोक से पीड़ित होते हैं, उसको उन्हें फाइब्रिनोलेटिक एंजाइम का एक प्रकार उपचार हेतु दिया जाता है। झींगा में पाये जाने वाला एंजाइम अकेले थक्के को नष्ट करने में मदद कर सकता हैं।

5. मांसपेशी प्रोटीन संश्लेषण को बढ़ावा देता है।

शरीर को अधिक मांसपेशीयों को संश्लेषित करने के लिए, आपको प्रोटीन परिपूर्ण खाद्य पदार्थों की आवश्यकता होती हैं। यह प्रोटीन कई मॉसाहार और अन्य खाद्य पदार्थों से प्राप्त की जा सकती है, लेकिन प्रोटीन के लिए झींगा दूसरे खाद्य पदार्थो से बेहतर स्रोत है क्योंकि इसमें प्रोटीन के साथ अनुकूल पोषक तत्व जैसे कि जस्ता और अन्य टेस्टोस्टेरोन आदि तत्व शक्तिशाली मांसपेशियों का निर्माण करते है।

6. स्वस्थ त्वचा बनाये रखने के लिए बेहतर विकल्प के रुप में।

उम्र से पहले त्वचा संबंधी परेशानी जैसे कि त्वचा का ढीलापन, ऐलर्जी, कालापन, रुखापन व अन्य विकारों का एक कारण है जोकि भोजन में एंटी–ऑक्सीडेंट की कम मात्रा जिससे सूर्य की उपस्थिति में क्षति तीव्र गति से होती है इससे निपटने के लिए बहुत सारे एंटी–ऑक्सीडेंट वाले खाद्य पदार्थों का उपभोग करें। झींगा में एक शक्तिशाली एंटी–ऑक्सीडेंट अस्थैक्सथिन की उपस्थिति है। यह एक अद्वितीय कैरोटेनोइड एंटी–ऑक्सीडेंट है जो अल्ट्रावाइलेट किरणों के प्रभाव को कम करने में सक्षम हैं।

प्लास्टिक प्रदूषण के कारण एवं प्रभाव - स्वच्छता ही सेवा

शशि प्रकाश त्रिपाठी, तकनीकी अधिकारी
नि.नि.प., नई दिल्ली

यह धरती, ईश्वर द्वारा मनुष्य को प्रदान की गई सबसे अद्वितीय भेंट है। भगवान ने इस धरा को विभिन्न प्रकार के पेड़, पौधों, पुष्पों, नदियों, पहाड़ों, झरनों, इत्यादि से सजा कर मानव को सौपा है। यह वह धरोहर है जिसे हमें सहेज कर रखना है, किन्तु क्या हम ऐसा वास्तव में करते हैं? आज जिस तरफ भी दृष्टि जाती है, उधर प्रदूषण रूपी दानव का राज है। हमने प्रगति की राह पर इस प्रकार दौड़ लगाई कि हमने प्राकृतिक संसाधनों का दमन कर दिया, जिस कारण आज हमें अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। ऐसी ही एक विकराल समस्या है ''प्लास्टिक प्रदूषण''।

सर्वप्रथम हमें यह समझना है, कि यह प्लास्टिक प्रदूषण क्या है तथा यह क्यों एक चिंतनीय विषय है। पॉलीमर विज्ञान व तकनीकी क्षेत्र में विकास के साथ ही प्लास्टिक रूपी रसायनिक वस्तु का भी निर्माण हुआ। बीते समय के साथ प्लास्टिक मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। जिधर भी देखो, प्लास्टिक एवं प्लास्टिक निर्मित वस्तुएँ बहुतायत में हमें मिल जाएँगी, फिर वह चाहे खिलौने हों, बर्तन हों, उपकरण या साज–सज्जा का समान हो, प्लास्टिक अनेकों रूपों में हमारे चारों ओर विद्यमान है। प्लास्टिक का एक सबसे आसान उदाहरण व सबसे अधिक उपयोग में लाए जाने वाला साधन ''पॉलिथीन'' है। यह घर–घर में पाया जाता है। आप कोई भी वस्तु खरीदने जाएँ जैसे खाने की सामग्री, कपड़े, दैनिक उपयोग में इस्तेमाल की जाने वाली वस्तुएँ, हर कहीं पॉलिथीन का बोल बाला है।

प्लास्टिक किस हद तक खतरनाक है, यह इस बात से समझा जा सकता है कि प्लास्टिक को पूर्ण रूप से सड़ने में 1000 साल तक लग जाते हैं। एक अध्ययन के अनुसार सिर्फ दिल्ली से प्रतिदिन 800 टन प्लास्टिक फेका जाता है। इसके अलावा, भारत में प्रतिदिन लगभग 2,50,000 प्लास्टिक की बोतलें इस्तेमाल करके फेंक दी जाती हैं। इस बात का अनुमान लगा पाना भी मुश्किल है कि इतनी तादाद में उत्पन्न हो रहे, प्लास्टिक कचरे का क्या होता होगा। प्लास्टिक को जलाने पर विषाक्त गैसें जैसे कार्बन डाइऑक्साइड, इत्यादि उत्पन्न होती है, जो ग्लोबल वार्मिंग तथा अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारक हैं। एक अन्य अध्ययन के अनुसार विश्व भर के महासागरों में वर्ष 2010 तक 80 लाख मेट्रिक टन तक प्लास्टिक कचरा जमा हो चुका है, जो हर वर्ष बढ़ ही रहा है। यह जलीय जीवन के लिए अत्यंत चिंताजनक एवं सोचनीय विषय है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के एक सर्वे के अनुसार देश में प्रतिवर्ष लगभग 9000 टन प्लास्टिक कचरा पुनः चक्रित किया जाता है जो कि कुल संख्या का 60 प्रतिशत ही है। बाकी बचे 6000 टन का क्या हो रहा है, वह वास्तव में एक चिंतन करने योग्य विषय है।

अब प्रश्न आता है कि हम इस प्लास्टिक की समस्या से निजाद पाने हेतु क्या कर सकते हैं। आरोन हिल के अनुसार ''जब आप दुनिया को गंदा कहते हैं तो यह देख लें, कि क्या आपके चश्में तो गंदे नहीं है।'' अतः हमें दूसरों को समझाने से पहले अपने स्तर पर प्लास्टिक का इस्तेमाल रोकना होगा। हमारे दादा–परदादा इस संदर्भ में शायद ज़्यादा समझदार थे, तभी प्लास्टिक के बर्तनों के स्थान पर पत्तल व दोने का इस्तेमाल करते थे, जो साल तथा ढाक जैसे वृक्ष के पत्तों से बनते थे जिनसे किसी प्रकार का प्रदूषण नहीं होता था। प्लास्टिक की बोतलों के स्थान पर कुल्हड़, मटका व सुराही का उपयोग होता था जो पूर्ण रूप से प्राकृतिक होते थे। हमें स्वयं भी इस प्रकार के कदम उठाने चाहिए एवं आने वाली नस्लों जैसे कि बच्चों को भी बाल्यकाल से ही प्लास्टिक के दुष्परिणामों से अवगत कराना चाहिए। चूंकि प्लास्टिक जैविक क्षरण से भी परे है, अतः हमें इसके इस्तेमाल को पूर्ण रूप से बंद करना होगा। लोगों में प्लास्टिक बैन को लेकर मुहिम छेड़ी जा सकती है। ग्रामीण स्थानों पर ट्रेनिंग कैंप आयोजित करने चाहिए तथा जन–मानस में स्वच्छता के प्रति सजगता जगानी चाहिए। उत्पन्न हो रहे कूड़े को बायोडिग्रेडेबल तथा नॉन–बायोडिग्रेडेबल गुणवत्ता के अनुसार ही उनका प्रक्षेपण करना चाहिए। स्वयं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी स्वच्छ व स्वस्थ भारत के निर्माण पर ज़ोर दिया है।

तो आइए, हम और आप इस मुहिम को आगे बढ़ाएँ ताकि हम अपने आने वाले भविष्य को प्रदूषण मुक्त बना सके तथा अपने बच्चों को एक ऐसा स्वस्थ भारत दे कर जाएँ, जहाँ वह खुलकर सांस ले सकें।

जय हिन्द,

निर्यात निरीक्षण अभिकरण-कोच्ची

निर्यात निरीक्षण अभिकरण-कोच्ची में आयोजित हिन्दी दिवस/पखवाड़ा समारोह - 2019 की रिपोर्ट

निर्यात निरीक्षण अभिकरण–कोच्ची मुख्यालय एवं उप कार्यालयों में दिनांक 14–9–2019 से 28–09–2019 तक हिन्दी दिवस/पखवाड़ा समारोह–2019 का सफल आयोजन किया गया।

समारोह के सफल आयोजन के लिए विभिन्न समितियों का गठन किया गया। श्री मनोज कुमार गुप्ता, उप निदेशक एवं हिंदी प्रभारी कार्यक्रम के मुख्य संयोजक रहे।

हिन्दी दिवस/हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन कर्मचारियों को अपना कार्यालयीन काम ज़्यादा से ज़्यादा राजभाषा हिंदी में करने में प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से किया गया। सभी कर्मचारियों से खास तौर पर इस अवधि के दौरान कार्यालयीन कार्य यथा संभव हिंदी में करने में विशेष प्रयास करने और हस्ताक्षर हिंदी में करने के लिये अनुरोध किया गया। सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अनुरोध किया गया कि अपने सक्रिय सहयोग एवं बहुमूल्य सहकारिता से कार्यक्रम को सफल बनाएं और पूरी तैयारी करके प्रतियोगिताओं में भाग लें।

संपूर्ण गरिमा के साथ दिनांक 14.9.2019 को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। दिनांक 14.9.2019 को सुबह 11.00 बजे उद्घाटन समिति के संयोजक श्री मनोज कुमार गुप्ता, उप निदेशक के नेतृत्व में कार्यक्रमों का संचालन बड़े उत्साह के साथ किया गया। श्री जि. जयपालन, उप निदेशक प्रभारी द्वारा परंपरागत दीप प्रज्वलित करते हुए समारोह का उद्घाटन किया गया। इसके बाद डॉ. पी. के. प्रमोद, सहायक निदेशक द्वारा की गई, ईश्वर वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। श्री मनोज कुमार गुप्ता, उप निदेशक द्वारा सभा का स्वागत किया गया। उनके द्वारा हिंदी दिवस की महत्ता के बारे में सभा को जानकारी दी गई। कार्यालय प्रभारी श्री जि. जयपालन, उप निदेशक द्वारा निनिअ–कोच्ची में हिंदी के कार्यान्वयन के लिए किए जा रहे कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया और आगे भी सक्रिय रूप से हिंदी का कार्यान्वयन सफलता से करने के लिए सभी से आह्वान किया गया।

माननीय निदेशक (निरीक्षण एवं गुणवत्ता नियंत्रण) महोदय से प्राप्त संदेश का वाचन श्री जि. जयपालन, उप निदेशक द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. लिजो जोन, सहायक निदेशक एवं डॉ. कंजन कुमार, सहायक निदेशक द्वारा बधाई भाषण किया गया। श्री टिंकु कुमार, प्रयोगशाला सहायक श्रेणी–II द्वारा किए गए धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हिन्दी दिवस एवं पखवाड़ा समारोह के उद्घाटन समारोह का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

श्री. जि. जयपालन, उप निदेशक (प्रभारी) के नेतृत्व में, प्रतियोगिता आयोजन समिति द्वारा इस दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन किया गया। प्रतिदिन के प्रश्नपत्रों की तैयारी, प्रतिभागियों के लिए आवश्यक सुविधाएं प्रदान करना, निर्णायकों की सेवाएं उपलब्ध कराना, विविध लिखित

परीक्षाओं के मूल्याँकन बाहर के विशेषज्ञों से करवाने आदि विभिन्न कार्यक्रमों के सक्रिय संचालन के द्वारा प्रतियोगिताओं का आयोजन व्यवस्थित तरीके से किया गया। इस दौरान कुल 10 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाडे का समापन समारोह दिनांक 30.09.2019 को शानदार तरीके से किया गया। समापन समारोह में श्री. कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (द.प.) राजभाषा विभाग, कोच्ची मुख्य अतिथि रहे। श्री महेश्वर राव, सहायक निदेशक द्वारा सभा का संबोधन किया गया। श्री जि. जयपालन, उप निदेशक प्रभारी अध्यक्ष, मुख्यातिथि एवं अन्य सदस्यों के द्वारा दीप प्रज्वलन कार्यक्रम संपन्न हुआ। श्री संदीप कुमार, प्रयोगशाला सहायक श्रेणी–II ने ईश्वर वंदना की। तदुपरांत डॉ. अभिजीत सातपुते, सहायक निदेशक द्वारा स्वागत भाषण किया गया। श्री जि. जयपालन, उप निदेशक प्रभारी द्वारा अध्यक्षीय भाषण किया गया। उन्होंने अपने भाषण में हिंदी पखवाडा समारोह के आयोजन से सरकार की राजभाषा नीति को तेज़ी से अमल में लाने हेतु अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रयास को प्रोत्साहित करने के महत्वपूर्ण उद्देश्य पर प्रकाश डाला, और पखवाड़ा समारोह के पश्चात भी राजभाषा के कार्यान्वयन में निरंतर प्रयास करने का आह्वान किया। मुख्यातिथि ने कार्यालय में हिंदी को प्रभावी ढंग से कार्यान्वित करने के बारे में अपना सशक्त एवं बहुमूल्य विचारों से सभा को प्रबुद्ध कराया। कार्यक्रम के दौरान मनोरंजन के लिये श्रीमती सेरिन जोसफ, प्रयोगशाला सहायक श्रेणी–II ने हिंदी गीत गाया। मुख्यातिथि एवं अध्यक्ष महोदय द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर वर्ष के दौरान आयोजित कार्यशालाओं के अंत में की गई मूल्यांकन परीक्षाओं में प्रथम तीन स्थान प्राप्त प्रतिभागियों को भी पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

सबसे अधिक अंक पाए प्रयोगशाला अनुभाग को राजभाषा रोलिंग ट्रॉफी दी गई और सबसे अधिक अंक पाए प्रतिभागी को राजभाषा प्रतिभा की उपाधि के रूप में विशेष ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया।

इसके अलावा हिंदी पखवाडा समारोह के दौरान दिनांक 27.9.2019 को आयोजित कार्यशाला में कंप्यूटरों में हिंदी में सुगमता से काम करने में राजभाषा विभाग द्वारा तैयार किए गए हिंदी ई–टूल्स के बारे में व्याख्यान दिया गया। इस कार्यक्रम का संचालन श्री धर्मेंद्र कुमार, सहायक निदेशक, हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग द्वारा किया गया।

निनिअ–कोच्ची मुख्यालय की तरह इसके उप कार्यालय–कोल्लम, बैंगलूर एवं मैंगलूर में दिनांक 14.9.2019 से 28.9.2019 तक विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के साथ हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया। मुख्यालय के आयोजन के संबंध में कुछ छायाचित्र संलग्न हैं।

निनिअ–कोच्ची में आयोजित हिंदी दिवस का आयोजन तथा हिंदी पखवाड़ा समारोह का उद्घाटन परंपरागत दीप प्रज्वलित करते हुए कर रहे हैं श्री. जि. जयपालन, उप निदेशक प्रभारी

निनिअ–कोच्ची के हिंदी पखवाड़ा समारोह के समापन समारोह में मुख्य अतिथि श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक प्रभारी (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (द.प.), राजभाषा विभाग, कोच्ची परंपरागत दीप प्रज्वलित करके सभा शुभारंभ कर रहे हैं ।

निनिअ–कोच्ची के हिंदी पखवाड़ा समारोह के समापन समारोह में अध्यक्षीय भाषण देते हुए श्री जि. जयपालन, उप निदेशक (प्रभारी)

निनिअ–कोच्ची के हिंदी पखवाड़ा समारोह के समापन समारोह में मुख्य अतिथि श्री. कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक प्रभारी (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (द.प.), राजभाषा विभाग, कोच्ची मुख्य भाषण देते हुए

मुख्य अतिथि श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक प्रभारी (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय(द.प.), राजभाषा विभाग, कोच्ची द्वारा किए गए मुख्य भाषण ध्यान से सुन रहे सदस्यों का दृश्य

निनिअ–कोच्ची में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में सबसे अधिक अंक प्राप्त प्रयोगशाला अनुभाग को राजभाषा रोलिंग ट्रॉफी प्राप्त हुई और मुख्य अतिथि श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (द.प.), राजभाषा विभाग, कोच्ची से ट्रॉफी ग्रहण कर रहे हैं प्रयोगशाला अनुभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी

निनिअ–कोच्ची में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में सबसे अधिक अंक प्राप्त होने से राजभाषा प्रतिभा की व्यक्तिगत ट्रॉफी जीती डॉ. एस. सुधा, तकनीकी अधिकारी, मुख्य अतिथि डॉ श्री. कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक(कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय(द.प.), राजभाषा विभाग, कोच्ची से पुरस्कार ग्रहण कर रही हैं।

निनिअ–कोच्ची में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में पुरस्कार जीते अधिकारी / कर्मचारी मुख्य अतिथि श्री. कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय(द.प.) राजभाषा विभाग, कोच्ची से पुरस्कार ग्रहण करते हुए विजेताओं का दृश्य

वर्ष में आयोजित हिंदी कार्यशालाओं के अंतिम घंटे में आयोजित मूल्यांकन परिक्षाओं में पुरस्कार जीते प्रतिभागी पुरस्कार ग्रहण करते हुए:

राज्य मात्स्यिकी अधिकारियों (सहायक निदेशक) के लिए "लैंडिंग साइट / मत्स्यन हार्बर / नीलामी हॉल की अपेक्षाओं" पर जागरूकता कार्यक्रम

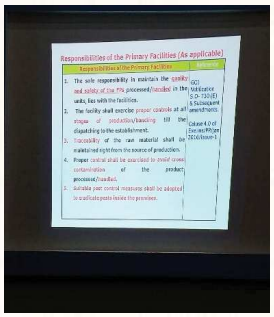

श्री एन. पलनिकुमार, सहायक निदेशक, निनिअ–कोच्ची, उप कार्यालय मंगलूर ने लैंडिंग साइट/मत्स्य पालन हार्बर/नीलामी हॉल से संबंधित निनिप/भारत सरकार की अपेक्षाओं पर मात्स्यिकी–मत्स्यन हार्बर के संयुक्त निदेशक के कार्यालय, मत्स्य पालन हार्बर, मत्स्य पालन विभाग, कर्नाटक सरकार, मालपे, उडुपी जिला, कर्नाटक में दिनांक 28.08.2019 को प्रस्तुतीकरण किया ।

कार्यक्रम में श्री के. गणेश, संयुक्त निदेशक मात्स्यिकी–मत्स्यन हार्बर और 9 सहायक निदेशकों ने भी भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन संयुक्त निदेशक मात्स्यिकी–मत्स्यन हार्बर द्वारा किया गया।

निनिअ-कोच्ची में जून 2019 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण / जागरूकता कार्यक्रमों का विवरण

विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस का आयोजन

निनिअ–कोच्ची ने भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार से प्राप्त निर्देश के अनुसार दिनांक 07.06.2019 को विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस मनाया। कार्यक्रम का उद्देश्य खाद्य सुरक्षा के बारे में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से कर्मचारियों और जनता के बीच जागरूकता बढ़ाना था। एफएसएसएआई ने एक प्रतिज्ञा, पोस्टर और बैक ड्रॉप को अग्रेषित किया है, जिसका उपयोग जनता में जागरूकता का संचालन करने के लिए किया जा सकता है। कार्यक्रम में कार्यालय के कर्मचारियों और व्यापार क्षेत्र से दस प्रतिनिधियों सहित लगभग 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया। डॉ प्रमोद पी. के. सहायक निदेशक, निनिअ–कोच्ची ने स्वागत भाषण दिया। निनिअ–कोच्ची के प्रभारी श्री. जयपालन जि. ने खाद्य सुरक्षा पर जोर देने के साथ कार्यक्रम की पृष्ठभूमि का विवरण प्रस्तुत किया। श्री जयपालन जि. और श्री. नॉर्बर्ट करिक्कश्शेरी, सी फूड एक्सपोर्ट एसोसियेशन ऑफ इंडिया (एसईएआई) के भूतपूर्व अध्यक्ष, केरल क्षेत्र ने संयुक्त रूप से समारोह का उद्घाटन किया।

श्री. नॉर्बर्ट ने खाद्य सुरक्षा के महत्व पर भाषण दिया। निनिअ–कोच्ची ने विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस पर पोस्टर प्रदर्शित किए हैं। इस दिन सभी प्रतिभागियों द्वारा खाद्य सुरक्षा का प्रतिज्ञा भी ली गई।

विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस 'का उद्घाटन कर रहे हैं श्री. नॉर्बर्ट करिक्कश्शेरी, सी फूड एक्सपोर्ट एसोसियेशन ऑफ इंडिया (एसईएआई) के भूतपूर्व अध्यक्ष, केरल

सभी प्रतिभागियों द्वारा खाद्य सुरक्षा प्रतिज्ञा लेने का दृश्य

ई-खरीद पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

निनिअ–कोच्ची ने, ई– अधिप्राप्ति पर दिनांक 19.06.2019 को अधिकारियों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। निनिअ–चेन्नई, कोलकाता और मुंबई के प्रतिनिधियों सहित कुल 13 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। केंद्रीय मत्स्य प्रौद्योगिकी संस्थान से डॉ. अशोक कुमार के. और श्रीमती सूर्य जी ने कक्षाएं संचालित की हैं। प्रशिक्षण सत्र के दौरान विशेषज्ञों द्वारा प्रतिभागियों की शंकाओं को दूर किया गया।

डॉ. अशोक कुमार, प्रमुख वैज्ञानिक, सीआईएफटी, कोच्ची, ई–अधिप्राप्ति पर कक्षा ले रहे हैं।

सार्वजनिक डिजिटल प्लेटफार्म पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

निनिअ–कोच्ची ने 16 सितंबर, 2019 को अपने सम्मेलन भवन में आम डिजिटल प्लेटफॉर्म पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। मूलस्थान प्रमाणपत्र योजनाओं के तहत की सेवाओं का लाभ उठाने वाले कुल 39 निर्यातकों ने प्रशिक्षण में भाग लिया। श्री सुधांशु शेखर दास, सहायक निदेशक, निनिअ–कोच्ची, ने सार्वजनिक डिजिटल प्लेटफॉर्म पर प्रस्तुति दी। सत्र के दौरान प्रतिभागियों के संदेह को स्पष्ट किया गया। प्रतिभागियों के लिए दो कंपनियों के मामलों के ज़रिए आवेदन के पंजीकरण की प्रक्रिया, आवेदन जमा करना और डिजिटल हस्ताक्षर के साथ प्रमाण पत्र जारी करने का विस्तार से प्रदर्शन किया गया।

श्री.सुधांशु शेखर दास, सहायक निदेशक, निनिअ–कोच्ची आम डिजिटल प्लेटफॉर्म के बारे में कक्षा संचालित करते हुए

निर्यात निरीक्षण अभिकरण -कोच्ची में वर्ष 2019-20 को निनिप एवं वाणिज्य मंत्रालय के निर्देशानुसार किये गये कार्यक्रमों का विवरण

दिनांक 21.06.2019 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर कार्यालय में स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए निनिअ–कोच्ची में योग किया गया, तथा ''योग और स्वास्थ्य समारोह'' नामक एक योग सत्र के दौरान सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सफेद टी–शर्ट पहनी। ''योग और स्वास्थ्य समारोह'' के आयोजन में एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लेकर इसे सफल बनाया :–

निर्यात निरीक्षण अधिकरण-कोलकाता की गतिविधियां एवं विवरण

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस

निनिअ–कोलकाता कार्यालय में विश्व तम्बाकू निषेध दिवस दिनांक 31.05.2019 के अवसर पर सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने शपथ लिया कि कभी धूम्रपान व अन्य किसी भी प्रकार के तम्बाकू उत्पादों का सेवन नहीं करूँगा एवं अपने परिजनों या परिचितों को भी धूम्रपान व अन्य तम्बाकू उत्पादों का सेवन नहीं करने के लिए प्रेरित करूँगा, अपने कार्यालय परिसर को भी तम्बाकू मुक्त रखूँगा और अपने सहयोगियों को भी इसके लिए प्रेरित करूंगा।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

विश्व योग दिवस, निनिअ–कोलकाता कार्यालय में दिनांक 21.06.2019 को आयोजित किया गया जिसमें सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया, इस अवसर पर अभिकरण प्रभारी महोदय ने बताया कि शरीर, मन और आत्मा को नियंत्रित करने में योग मदद करता है। शरीर और मन को शांत करने के लिए यह शारीरिक और मानसिक अनुशासन का एक संतुलन बनाता है। यह तनाव और चिंता का प्रबंधन करने में भी सहायता करता है और आपको आराम से रहने में मदद करता है। योग आसन शक्ति, शरीर में लचीलेपन और आत्मविश्वास विकसित करने के लिए जाना जाता है।

स्वच्छता ही सेवा अभियान 2019 (प्रसंग / विषयवस्तु-प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन) दिनांक 11.09.2019 से 02.10.2019

स्वच्छता ही सेवा अभियान का प्रचार :– निनिअ–कोलकाता कार्यालय परिसर में बैनर द्वारा और पम्फलेट्स स्कूल के बच्चों में जागरूकता के लिए बांटा गया।

स्वयं के कार्यस्थल की विशेष सफाई अभियानः–
कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा विशेष अभियान।

कार्यालय परिसर सफाई अभियान

हिंदी दिवस/पखवाड़ा का आयोजन

निनिअ. कोलकाता कार्यालय में हिंदी दिवस/पखवाड़ा दिनांक 13.09.2019 से 27.09.2019 तक आयोजित किया गया इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया, हिंदी दिवस/पखवाड़ा के प्रचार के लिए कार्यालय परिसर में बैनर प्रदर्शित किया गया।

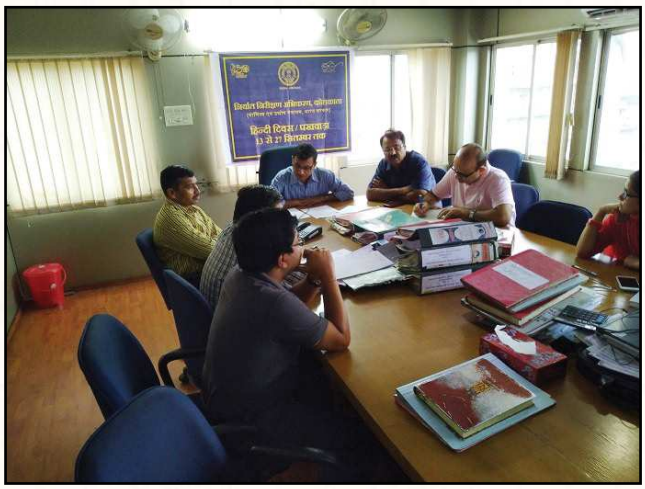

महात्मा गांधी के विचारों पर व्याख्यान का आयोजनः–

महात्मा गांधी के 150 वीं जन्मदिवस समारोह (02.10.2018 से 02.10.2020) दो वर्ष की अवधि के दौरान निनिअ–कोलकाता कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा व्याख्यान/चर्चा आयोजित की गयी।

खाद्य सुरक्षा को बनाए रखने में विश्लेषणात्मक परीक्षण की भूमिका ''खाद्य परीक्षण गुणवत्ता और आंकडों की प्रामाणिकता पर निर्भर है''

डॉ. अनूप ए.कृष्णन, डॉ. लिजो जॉन, डॉ.बी. विजय कुमार,
श्री. टी. महेश्वर राव और श्री.जयपालन जि.

प्रस्तावना

खाद्य परीक्षण में विश्लेषणात्मक प्रणालियों एवं तकनीकों का विकास और अनुप्रयोग उपभोक्ताओं की चिंता के समानांतर बढ़ी है, कि उनके भोजन में क्या है और उनके द्वारा खाए जाने वाले भोजन की सुरक्षा क्या है। बढ़ती उपभोक्ताओं की मांगों का पर्याप्त जवाब देने के लिए, दुनिया भर के खाद्य विश्लेषकों को लगातार जटिल चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिनके लिए सर्वोत्तम उपलब्ध विश्लेषणात्मक तकनीक का उपयोग करने की आवश्यकता है। खाद्य विश्लेषण का पहला लक्ष्य पारंपरिक रूप से रहा है, और अभी भी खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए, खाद्य प्रयोगशालाओं को आधुनिक विश्लेषणात्मक तकनीकों के लिए अपनी शास्त्रीय प्रक्रियाओं का आदान–प्रदान करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है, जो उन्हें इस वैश्विक मांग का पर्याप्त जवाब देने की अनुमति देता है। नतीजतन, खाद्य विश्लेषक, नियामक अभिकरणों और गुणवत्ता नियंत्रण प्रयोगशालाओं द्वारा अब अधिक प्रभावशाली, तेज और सस्ती विश्लेषणात्मक प्रक्रियाओं की आवश्यकता है। इन मांगों ने अधिक परिष्कृत उपकरणों और अधिक उपयुक्त तरीकों की आवश्यकता को बढ़ा दिया है, जबकि संवेदनशीलता, सटीकता, विशिष्टता और या विश्लेषण की गति को बढ़ाते हुए बेहतर गुणात्मक और मात्रात्मक परिणाम प्रदान करने में सक्षम हैं।

खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाओं का महत्व और परीक्षण में इसका अनुपालन नियामकों और उपभोक्ताओं के लिए उत्पन्न विश्वास है। रासायनिक, सूक्ष्मजैविकी और पर्यावरणीय प्रदूषण द्वारा उत्पन्न स्वास्थ्य और सुरक्षा जोखिमों के कारण, विश्लेषणात्मक तरीके खाद्य सुरक्षा कार्यक्रमों का केंद्र बिंदु बन रहे हैं। यह लेख प्रमुख संकेतकों और खाद्य सुरक्षा को बनाए रखने में विश्लेषणात्मक परीक्षण की भूमिका के लिए आगे का मार्ग प्रस्तुत करता है।

खाद्य नियंत्रण कार्यक्रम

खाद्य नियंत्रण कार्यक्रम एक प्रणाली है, जो विश्व स्तर पर सरकारों द्वारा उपभोक्ताओं के लिए सुरक्षित और पौष्टिक भोजन की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए रखी गई है। भारत में सुरक्षित खाद्य निर्यात करने और घरेलू बाजार में सुनिश्चित करने के लिए समग्र खाद्य नियंत्रण कार्यक्रम रखने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। इस तरह के कार्यक्रम की प्रमुख अनिवार्यताओं में एक कानूनी ढांचा, निगरानी, मॉनिटरिंग और खाद्य श्रृंखला में खाद्य पदार्थों की प्रमाणीकरण प्रक्रिया और अगर भोजन को मानव उपभोग के लिए अयोग्य समझा जाता है तो सक्रिय उपाय करना शामिल है।

भारत में निर्यात और आयात करने वाले देशों के नियमों को लागू करने के लिए निर्यात निरीक्षण परिषद द्वारा और आयात के लिए राष्ट्रीय कानूनों को लागू करने के लिए भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण द्वारा खाद्य नियंत्रण की जिम्मेदारी निभायी जाती है। खाद्य नियंत्रण मुख्य रूप से उपभोक्ता की सुरक्षा के लिए स्थापित किया गया है। एक पूर्णतः स्पष्ट खाद्य नियंत्रण कानून और संबद्ध प्रक्रियाएं एक मानक प्रदान करती हैं जो सभी खाद्य उत्पादकों और प्रसंस्करणकर्ताओं को पालन करना चाहिए।

संचालन ढांचा

एक पूर्ण खाद्य नियंत्रण कार्यक्रम विकसित करने में दो प्रमुख हित हैं:

- मानकों की स्थापना
- परीक्षण के माध्यम से खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने वाली प्रयोगशालाओं के माध्यम से उसी का कार्यान्वयन।

इस तरह की प्रयोगशाला के अस्तित्व को सही ठहराने के दो मुख्य कारक हैं:

- उद्योग को वितरण से पहले अपने खाद्य पदार्थों को प्रमाणित करने की आवश्यकता है।
- सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए विश्लेषण के माध्यम से मांग करती है कि खाद्य पदार्थ बाजार में पहुंच रहे हैं और निर्यात किया जा रहा है, सुरक्षित है, और नियामक मानकों को पूरा करता है, इसलिए यह प्रमाणित करने के लिए एक स्वतंत्र साधन प्रदान करता है कि प्रमाणन प्रणाली सही ढंग से संचालित हो रही है। इस तरह की सेवा प्रदान करने के लिए एक प्रयोगशाला की स्थापना इसलिए खाद्य नियंत्रण क्षमता में उल्लेखनीय रूप से वृद्धि करती है।

खाद्य संदूषण

खाद्य संदूषण के सामान्य स्रोतों में एंटीबायोटिक्स, संचित कीटनाशक अवशेष, संदूषक, रोगजनक और अन्य मिलावट शामिल हैं। लेकिन अवांछित अशुद्धियाँ उत्पादन और उपभोग के बीच किसी भी अवस्था में प्रवेश कर सकती हैं। वैश्विक व्यापार में वृद्धि और अधिक चिंता का विषय है, खासकर जब खाद्य पदार्थ उन स्थानों में उत्पन्न होते हैं जहाँ अभी भी आयात करने वाले देश में प्रतिबंधित रसायनों का उपयोग करते हैं और जहां पता लगाने और मॉनिटरिंग कम मजबूत है।

सूक्ष्मजीव संदूषण

जब आप "खाद्य सुरक्षा" सुनते हैं, तो शुरू में सूक्ष्म जैविकी मुद्दों पर सोचने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। पिछले कुछ दशकों में, साल्मोनेला एसपीपी, कैंपिलोबैक्टर, लिस्टेरिया मोनोसाइटोजेन्स, विब्रियो एसपीपी, और एस्चेरिचिया कोलाई O157: H7 से जुड़ी खाद्य जनित बीमारियाँ जन चेतना में छाई हुई हैं। देश भर में और विभिन्न देशों के लिए मत्स्य, अंडे, मुर्गी पालन, मांस, अस्वास्थ्यकर दुग्ध या रस, पनीर, कच्चे फल और सब्जियों, मसालों और नट्स उत्पाद के शीर्ष कारणों से जुड़े चिंता का एक मुख्य विषय,

रोगज़नक़ साल्मोनेला है।

रासायनिक संदूषण

रासायनिक सुरक्षा के मुद्दों के बारे में लोगों की जागरूकता तेजी से बढ़ रही है। रासायनिक संदूषकों द्वारा उत्पन्न विविध सुरक्षा और विश्लेषणात्मक चुनौतियों को उजागर करने वाली हाल की घटनाओं को समाचार सुर्खियों में कब्जा किया गया है। प्रतिजैविक, कीटनाशक अवशेषों, भारी धातुओं, अफलाटॉक्सिन और अन्य विषाक्त पदार्थों की उपस्थिति के कारण खाद्य पदार्थों को वापस लेने के लिए विभिन्न देशों के लिए चिंताएं हैं।

खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाएँ और चुनौतियाँ

खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाएं खेत से भोजन पटल तक की प्रक्रिया में विभिन्न चरणों में प्रदूषण का पता लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और आपूर्ति श्रृंखला से असुरक्षित भोजन को खत्म करने में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न हितधारकों की सहायता करती हैं। असुरक्षित भोजन के सेवन से स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे जनता का ध्यान आकर्षित होता है। लेकिन जब खाद्य सुरक्षा एक प्राथमिक कार्य है, तो खाद्य प्रयोगशालाओं में व्यापक जिम्मेदारियां होती हैं, जैसे कि समग्र गुणवत्ता के मॉनिटरिंग, जिसमें ताजगी, स्वाद, और पोषक तत्व और कैलोरी सामग्री शामिल है, साथ ही साथ प्राकृतिक विशेषताओं जैसे कि बनावट और करारापन। वे अन्य विश्लेषणों के अलावा खाद्य में वसा और शर्करा और पैकेजिंग सामग्री की उपयुक्तता का भी आकलन करते हैं। खाद्य प्रयोगशालाओं में नमूना तैयार करने के लिए; भौतिक, रासायनिक और जैविक विश्लेषण; और डेटा प्रबंधन के लिये अत्याधुनिक उपकरण हैं। कुछ में रूप, गंध, स्वाद और मुंह के एहसास के मूल्यांकन करने के लिए संवेदी अंगों के उपयोग की इन्द्रियाग्राही क्षमताएं भी हैं।

वर्तमान में खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियाँ खाद्य प्रामाणिकता और खाद्य धोखाधड़ी हैं। खाद्य प्रयोगशालाएं भी कूटकरण के खिलाफ सतर्क रहती हैं – उदाहरण के लिए, एक्स्ट्रा विर्जिन ऑयल के रूप में निम्न गुणवत्ता वाले ऑलिव ऑयल, बेशकीमती बासमती के रूप में चावल के विभिन्न उपभेद, प्राकृतिक मत्स्य/झींगे के रूप में खेती मत्स्य/झींगे या मांस का व्यापार। सामान्य तौर पर, इस तरह के आर्थिक हस्तक्षेप उच्च कीमत पर एक घटिया उत्पाद प्रदान करके उपभोक्ताओं को धोखा देते हैं।

इन चुनौतियों ने नवीनतम आणविक जैविकी आधारित तकनीकों, एनएमआर, तात्विक रूपरेखा आदि के उपयोग द्वारा विश्लेषणात्मक परीक्षण में स्तर बढ़ाया है। उभरते हुए खाद्य सुरक्षा मुद्दों के जवाब में नवीन विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण विकसित किए जा रहे हैं। स्थापित, आधिकारिक तौर पर अनुमोदित तरीकों का उपयोग ज्ञात मुद्दों के मॉनिटर के लिए किया जाता है। अक्सर, नए विश्लेषणात्मक तरीकों का विकास या मुद्दों के जवाब में तेजी से संशोधित किया जाता है, जैसे कि मेलामाइन संदूषण, जो अप्रत्याशित हैं। ऐसे उदाहरणों में, ध्वनि से प्राप्त सटीक डेटा, मान्य विश्लेषणात्मक तरीकों के लिए उद्योग हितधारकों

और नियामकों को ठोस वैज्ञानिक निर्णय लेने में सक्षम बनाने की आवश्यकता होती है। आगे जाकर, वैश्विक खाद्य श्रृंखला की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उद्योग के प्रयासों में नवाचार की यह भावना महत्वपूर्ण बनी रहेगी।

परीक्षण के माध्यम से डेटा की गुणवत्ता

प्रत्यायन

अन्तर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन (आईएसओ) 17025 मानक का उपयोग खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाओं सहित परीक्षण और अंशांकन प्रयोगशालाओं की मान्यता के लिए एक आधार के रूप में 1999 से से किया गया है। आईएसओ 17025 एक रूपरेखा प्रदान करता है जिस पर प्रयोगशालाएं डेटा विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली का निर्माण कर सकती हैं। खाद्य सुरक्षा कार्यक्रमों के समर्थन में विश्वसनीय डेटा के महत्व के बारे में बढ़ती जागरूकता ने प्रयोगशाला क्षमता और मान्य, "उद्देश्य के लिए उपयुक्त" परीक्षण विधियों के उपयोग पर एक रोशनी डाली है। तदनुसार, खाद्य निर्माता और नियामक अभिकरण आईएसओ 17025 मानक में शामिल लोगों से परे योग्यता, विशिष्ट आवश्यकताओं और विधि अपेक्षाओं को व्यक्त कर रहे हैं। हालांकि, इस तरह की अपेक्षाएं चर स्तरों के साथ व्यक्त की जाती हैं, इस आधार पर कि क्या विश्लेषण वाणिज्यिक, तीसरे पक्ष के आधार पर या नियामक उद्देश्यों के लिए किया जाता है। यह भी रखा जाना चाहिए कि विभिन्न आयातक देशों/ग्राहकों को सुगम व्यापार के लिए आधार के रूप में मान्यता की आवश्यकता है। चूंकि उम्मीदें और ग्राहक की आवश्यकताएं विकसित होती रहती हैं, आईएसओ 17025 से परे मानकों की स्थापना के लिए मार्गदर्शन आवश्यक है।

आंतरिक प्रयोगशाला गुणवत्ता नियंत्रण कार्यक्रम

एक आंतरिक प्रयोगशाला नियंत्रण कार्यक्रम किसी भी परीक्षण प्रयोगशाला की रीढ़ है। यह आदमी, मशीन और विधि तीन चीज़ों के निष्पादन पर एक संकेत देता है। पेशेवर अनुभव और सामान्य ज्ञान के साथ दृष्टिकोण गुणवत्ता नियंत्रण यह सुनिश्चित करने के लिए मुख्य संसाधन उपलब्ध है कि केवल गुणवत्ता डेटा जारी किया जाना इस प्रयोजन के लिए उचित है। विभिन्न माप जैसे प्रतिकृति परीक्षण, पुनः परीक्षण, बेपरवाह नमूने, डेटा और कंट्रोल चार्ट का सहसंबंध, प्रवीणता परीक्षण जैसे बाहरी गुणवत्ता नियंत्रण कार्यक्रम के अलावा प्रयोगशालाओं में दिन–प्रतिदिन की सटीकता और सटीकता के बारे में जानकारी देता है।

प्रवीणता परीक्षण

प्रवीणता परीक्षण उनके प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाओं के लिए एक बाहरी गुणवत्ता मूल्यांकन प्रदान करता है। प्रवीणता परीक्षण को आईएसओ/आईईसी 17025:2017 का खंड 7.7.2 और विभिन्न ग्राहकों की भी आवश्यकता रही है। प्रवीणता परीक्षण में सहभाग लेने के साथ जुड़े कई लाभ हैं। आईएसओ/आईईसी 17025 मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं के लिए, "परीक्षण और

अंशांकन की वैधता के मॉनिटरिंग के लिए गुणवत्ता नियंत्रण प्रक्रियाओं" के उपयोग और विभिन्न विनियामक अनुपालन के संबंध में मान्यता आवश्यकताओं का अनुपालन करने के लिए प्रवीणता परीक्षण किया जाना चाहिए। विनियामक अनुपालन के अलावा, प्रवीणता परीक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से प्रयोगशाला के विश्लेषणात्मक प्रोटोकॉल, प्रयोगशाला कर्मियों और उपकरणों की विश्वसनीयता के विश्लेषण करने में मदद मिल सकती है। प्रयोगशालाओं के लिए जो आदर्श प्रवीणता परीक्षण परिणाम प्राप्त करते हैं, यह माप प्रक्रियाओं और संबंधित सामग्रियों की प्रभावशीलता में विश्वास को बढ़ावा दे सकता है, विश्लेषकों की क्षमता प्रदर्शित करता है, और प्रत्यायित परीक्षण और अंशांकन परिणामों में प्रयोगशाला के निष्पादन के संबंध में ग्राहक आश्वासन प्रदान करता है।

इसके विपरीत, एक प्रवीणता परीक्षण कार्यक्रम की विफलता प्रयोगशाला की गुणवत्ता प्रणाली के भीतर गैर–अनुरूपताओं की पहचान करने में मदद कर सकती है, जो आगे के कर्मियों के प्रशिक्षण या विधानों या दिशानिर्देशों की समझ की आवश्यकता को दर्शाती है; नियमित रखरखाव, अंशांकन, या उपकरणों के प्रतिस्थापन; या, विश्लेषणात्मक प्रक्रियाओं के सामंजस्य या संशोधन की आवश्यकता। इन कार्यक्रमों में सहभागिता समय के साथ अपने साथियों की तुलना में अपने परिणामों की गुणवत्ता और सटीकता का आकलन करने के लिए एक साधन प्रदान करती है, प्रयोगशाला में कार्यरत तरीकों की प्रभावशीलता के मॉनिटरिंग और सत्यापन के लिए एक स्वतंत्र उपकरण प्रदान करती है।

आंकड़ा समग्रता

"यदि आपने इसे नहीं लिखा है, तो यह कभी नहीं हुआ। (जहां तक एक ऑडिटर का संबंध है ...) "

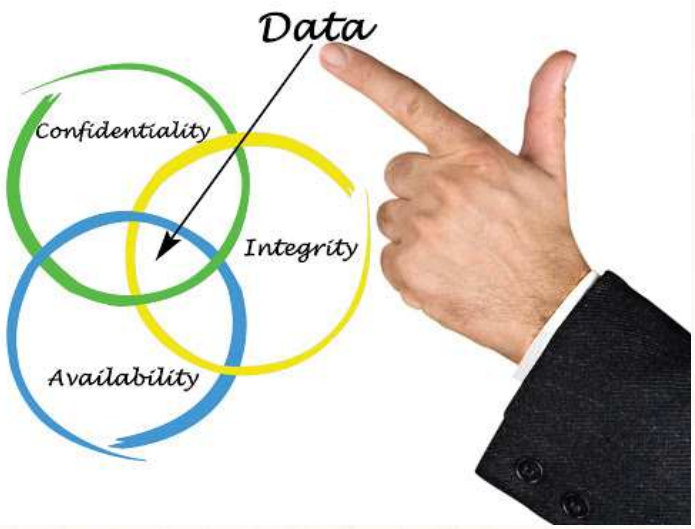

आंकड़ा समग्रता यह आश्वासन है कि डेटा रिकॉर्ड अपने मूल संदर्भ में सटीक, पूर्ण, अक्षुण्ण और बनाए रखा जाता है, जिसमें अन्य डेटा रिकॉर्ड से उनका संबंध शामिल है। आईएसओ 17025: 2017 के खंड 7.11.3 के अनुसार आंकड़ा समग्रता एक आवश्यकता है। महत्वपूर्ण पहलू गलती और कदाचार के बीच के अंतर को समझना है। आंकड़ा समग्रता समस्याएं विश्वास को तोड़ती हैं। ऑडिट/मूल्यांकन के बीच के समय में, विश्वसनीयता को सही काम करना है। यदि एक ऑडिट/मूल्यांकन समाप्त हो गया है, तो विश्वास टूट गया है, तो आगे बढ़ने से पहले फिर से निर्माण करने और भविष्य में भी इसे सुनिश्चित करने के लिए कुछ अभ्यासों की आवश्यकता है।

प्रयोगशाला आंकडे की समग्रता सुनिश्चित करने में पहली चुनौती में हाइब्रिड सिस्टम (इलेक्ट्रॉनिक और पेपर) का उपयोग शामिल है। यदि दोनों का उपयोग किया जाता है, तो कागज और इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड को सिंक्रनाइज़ करने की आवश्यकता होती है। कंप्यूटराइज्ड प्रणाली इलेक्ट्रॉनिक आंकडे के हेरफेर की क्षमता के कारण प्रयोगशाला आंकडे की समग्रता के लिए एक दूसरी चुनौती जोड़ती हैं। इस तरह के हेरफेर में शामिल हो सकते हैं

- मानवीय त्रुटियां
- अनुचित नमूना संग्रह प्रक्रिया
- नमूना समग्रता अज्ञात
- जिन नमूनों का विश्लेषण नहीं किया गया है उनके डेटा की रिपोर्ट करना ("ड्राई लैब")
- मौजूदा डेटा को गलत साबित करना
- क्यूसी डेटा का चयनात्मक उपयोग
- फ़ाइल अधिलेखन
- पीक शेविंग, जूसिंग (पीक बढ़ाना), हटाना
- प्रभावशीलता को कृत्रिम रूप से बढ़ाने के लिए नमूनों की ऑफ–रिकॉर्ड स्पाइकिंग
- समय यात्रा (बदलते समय और तिथियां/अनियमता)

- डेटा जो है "सच्चा होना अच्छा" जैसे 100% पुनःप्राप्ति
- ऑडिट ट्रेल्स चालू नहीं हुई
- इलेक्ट्रॉनिक डेटा और पेपर कच्चे डेटा के बीच विसंगतियां।
- तिथियां जो मेल नहीं खाती हैं (उदाहरणः क्रोमैटोग्राम की तारीखें विश्लेषण तिथि के रूप में दावा की जा रही से मेल नहीं खातीं)
- एकीकरण पैरामीटर जो पता लगाने के योग्य या पुनर्प्राप्ति योग्य नहीं हैं। प्रयोगशालाएं यह प्रदर्शित करने में सक्षम नहीं हैं कि एकीकरण मापदंडों को फिर से दर्ज किए जाने पर समान परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।
- अधूरा अभिलेखन

विभिन्न उपकरणों के ऑडिट ट्रेल के दौरान आंकडे की समग्रता खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाओं में बढ़ती चिंता का विषय है और इस क्षेत्र को सॉफ्टवेयर के माध्यम से दर्ज/बनाए रखने के लिए 21 सीएफआर (भाग 11) का अनुपालन करके मजबूत बनाने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

आज और कल की चुनौतियों का सामना करने के लिए विश्वसनीय और मान्य तरीकों का एक शस्त्रागार का निर्माण तीन आवश्यक तत्वों पर निर्भर करता हैः आम सहमति, निरंतर विकास और नई प्रक्रियाएं। खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाओं की गुणवत्ता में सुधार, योग्य, प्रशिक्षित और प्रेरित व्यक्तियों, प्रतिनिधि नमूनाकरण, समग्रता और अभिरक्षा की श्रृंखला सुनिश्चित करके नमूनों को संभालने, अंशशोधित उपकरणों, मान्य परीक्षण विधियों, प्रभावी आन्तरिक गुणवत्ता नियंत्रण तंत्र, आंकडा समग्रता और प्रत्यायन का उपयोग करके किया जा सकता है। प्रयोगशाला सूचना आधारित प्रबंधन प्रणाली (एलआईएमएस) की आवश्यकता, पहचान किए गए क्षेत्रों पर क्षमता निर्माण और आंकडा समग्रता सुनिश्चित करना खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला में सबसे बड़ी चुनौती है और इसे लागू करने के लिए एक नियामक ढांचा समय की आवश्यकता है।

प्राकृतिक संसाधन

श्री लेखराज कटारिया, सहायक निदेशक (त.)
नि.नि.अ., दिल्ली

प्रकृति ने मानव को बहुत सी महत्वपूर्ण एवं लाभकारी उपहार एक सुन्दर आजीविका निर्वाहन करने के लिए प्रदान की है, प्राकृतिक संसाधन पृथ्वी पर भिन्न रूपों में पाए जाते है। हालांकि ये समान रूप से वितरित नही है। सभी प्राकृतिक संसाधन जैसे मिटटी, भूमि, जल खनिज, सौर उर्जा, बन्य जीवन, बन, उर्जा, घास के मैदान मछली आदि मनुष्य के द्वारा अपने कल्याण के लिए प्रयोग किए जाते है।

सभी वैज्ञानिक सभी संसाधन आर्थिक विकास के लिए एवं राष्ट्रीय उत्पादन के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अनुकूल प्राकृतिक संसाधनों की पर्याप्त उपलब्धता आर्थिक विकास में सहायक है, जबकि इसकी कमी देश में आर्थिक विकास की प्रक्रिया को अवरूद करती है। मानव द्वारा विकसित तकनीकी प्राकृतिक संसाधनों का उचित विदोहन करती है प्रकृति में अभी भी ऐसे कई संसाधन उपलब्ध है, जिन्हें मनुष्य अनदेखा कर रहा है।

कुछ प्राकृतिक संसाधन सीमित या गैर–नवीनीकृत प्रकार खनिज, तेल आदि के है, हालांकि नवीनीकृत या असीमित मात्रा के प्रकार वाले भूमि, मछली, जल, वन आदि है। गैर नवीनीकृत साधन एक बार प्रयोग होने के बाद दुबारा वापस नही आते, नवीनीकृत संसाधन को यदि हम उचित देखरेख के साथ प्रयोग करें तो बिना किसी रूकावट के प्रयोग किया जा सकता है, राष्ट् का सतत् विकास करने के लिए हमे नवीनीकृत संसाधनों को बहुत सावधानी के साथ ही इनकी गुणवत्ता को बनाए रखकर प्रयोग करने की आवश्यकता है। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के कुछ सामान्य तरीके निम्न है।

वनों के उन्मूलन के प्रतिशत को कम करना होगा, और नये पेड़ों को लगाने हेतु कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करना होगा। सभी को वृक्षारोपण में भाग लेना चाहिए और पेडों की देखरेख करनी चाहिए। प्राकृतिक संसाधनों के अधिकाधिक प्रयोग को कम किया जाये, तथा इसके समुचित और समित उपयोग को बढावा दिया जाना चाहिए।

सभी को अपशिष्ट निराकरण का कार्य करना चाहिए, और जैव विविधता को बनाए रखना चाहिए। किसानों के लिए मिश्रित फसल, फसल चक्र और उर्वरकों के प्रयोग जैसे खादए जैव उर्वरक, जैविक उर्वकर आदि के बारें में जानकारी देनी चाहिए।

वर्षा के जल संरक्षण के तरीकों को लोगों के बीच में बढावा देना चाहिए। पानी के दुरुपयोग को रोकने के तरीको को बढ़ावा देना चाहिए। लोगों को उर्जा संरक्षण के तरीकों को उर्जा के दुरुपयोग को रोकने के लिए प्रयोग करने चाहिए। वन्य जीवों के शिकार को प्रतिबंधित करके वन्य जीवों के जीवन का संरक्षण करना चाहिए। उर्जा के नवीनीकृत संसाधनों को जितना अधिक हो सकें उतना अधिक अनवीनीकृत साधनों के स्थान पर प्रयोग करना चाहिए। सभी स्तर के लागों को प्राकृतिक संसाधनों के आवश्यक प्रयोग और संरक्षण के बारे में समान रूप से शिक्षित किया जाना चाहिए।

आत्मविश्वास

सुभाष शर्मा, आशुलिपिक
नि.नि.अ., दिल्ली

जीवन निर्माण कठिन प्रक्रिया है। बच्चे ही नहीं, बडे भी संस्कारी वातावरण न मिलने से राह भटक जाते है। हर व्यक्ति में अच्छाई और बुराई समाहित होती है, वैज्ञानिकों खोज की है कि मनुष्य के सिर में बेर जितनी दो ग्रंथ्रियां होती है। अच्छाई और बुराई की। योग साधना और अन्य साधनों से अच्छाई की ग्रथि सक्रिय हो जाए तो हजारों कोशिश करने भी मनुष्य बुरा नही होगा एक कठिनाई है कि दोनों ग्रंथ्रियॉ साथ–साथ जुडी हुई है। कही भूल से अच्छाई के स्थान पर बुराई की ग्रथि संक्रिय हो जाए तो फिर बुराई की ही अनुभूति होने लगेगी, फिर भी अच्छाई की संरचना के लिए प्रयास एवं प्रयोग तो करने ही होंगे। इसलिए दलाई लामा ने कहा है कि मनुष्य अपनी क्षमता और आत्मविश्वास के दम पर एक बेहतर दुनिया का निर्माण कर सकता है।

यह सच है कि अच्छाई को सक्रिय करने से बुराई दब जाती है। आज कल यह प्रचलन में है कि ब्रेन वॉशिग से हर व्यक्ति की सोच को परिवर्तन किया जा सकता है। इससे न केवल बच्चों, एवं उम्रदराज लोग सभी शामिल है।

निर्यात निरीक्षण परिषद / निर्यात निरीक्षण अभिकरण कार्यालयों में अप्रैल, 2019 से सितम्बर, 2019 तक सेवानिवृत्त अधिकारी एवं कर्मचारी गण

निर्यात निरीक्षण अभिकरण – कोच्ची

क्र. सं.	नाम	पदनाम	सेवा निवृत्त	फोटो
1.	श्रीमती के. चन्द्री	लिपिक श्रेणी– I	30.09.2019	

निर्यात निरीक्षण अभिकरण – मुंबई

क्र. सं.	नाम	पदनाम	सेवा निवृत्त	फोटो
1.	श्रीमती अनघा. एस. धवले	लिपिक श्रेणी–I	30.09.2019	

निर्यात निरीक्षण अभिकरण – चेन्नई

क्र. सं.	नाम	पदनाम	सेवा निवृत्त	फोटो
1.	श्रीमती थेनमोज़ि सुब्रमणि	कार्यालय सहायक	30.04.2019	
2.	श्री अश्वनी कुमार बहेल	हिन्दी अनुवादक	30.08.2019	

निर्यात निरीक्षण अभिकरण – कोलकाता

क्र. सं.	नाम	पदनाम	सेवा निवृत्त	फोटो
1.	श्री प्रमोद कुमार शर्मा,	प्रयोगशाला सहायक–I (विशेष)	31.08.2019	

निर्यात निरीक्षण परिषद्

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)

एन.डी.वाई.एम.सी.ए. कल्चरल सेंटर बिल्डिंग, 1, जयसिंह रोड, नई दिल्ली–110001

23365540 / 23748189 eic@eicindia.gov.in www.eicindia.gov.in